रामसेतु प्राकृतिक है, मानव निर्मित नहीं

रामेश्वरम के पास समुद्र में स्थित रामसेतु को लेकर विवाद नया नहीं है। नासा के चित्रों ने यह तो साबित कर दिया है कि इस क्षेत्र में समुद्र में डूबी कोई संरचना ज़रूर है, लेकिन उसने यह भी साफ कर दिया है कि यह मानव निर्मित कतई नहीं हो सकती। यह प्राकृतिक है। उधर, कुछ लोग यह मानने को तैयार नहीं हैं। उनका मानना है कि इसका निर्माण लंका विजय के दौरान भगवान राम की वानर सेना ने किया था। **जे. अकलेचा** के अनुसार चिंता यह है कि आस्था के इस विवाद में कहीं इस परियोजना से जुड़े पर्यावरण व जीविका के सवाल दरकिनार न हो जाएं।

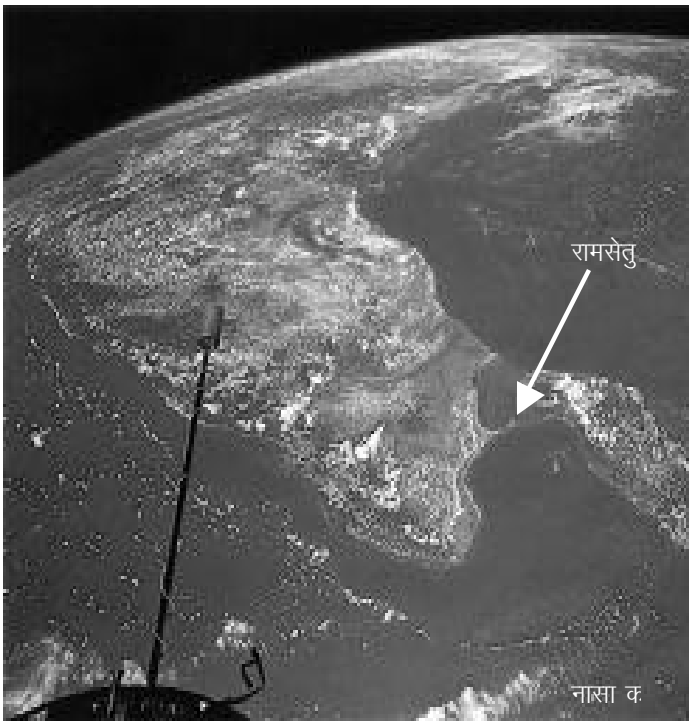

रामसेतु एक बार फिर चर्चा में है। पाक जलडमरू मध्य और मन्नार की खाड़ी को समुद्री नहर के ज़रिए जोड़ने की सेतुसमुद्रम परियोजना की वजह से इस अति प्राचीन ढांचे के नष्ट हो जाने की आशंका जताई जा रही है। इसी को बचाने के लिए कुछ संगठनों ने एक अभियान छेड़ दिया है। उनका तर्क है कि यह सेतु भगवान राम की वानर सेना द्वारा बनाया गया ऐसा अनोखा स्मारक है जिसे बर्बाद करना हिंदुओं की आस्था पर कुठाराघात करने के समान होगा।

आगे बढ़ने से पहले यह जान लें कि इस रामसेतु, जिसे एडम्स ब्रिज भी कहा जाता है, की मौजूदा स्थिति क्या है। यह श्रीलंका के पास मन्नार द्वीप और भारत के दक्षिणी-पूर्वी तट पर स्थित रामेश्वरम के बीच लाइमस्टोन से बने छोटे-छोटे टीलों या टापुओं की एक ृंखला है। यह भारत में धनुषकोटि के पास से शुरू होती हुई श्रीलंका के तलाई मन्नार तक जाती है। यह ृंखला करीब 48 किलोमीटर लंबी है और पाक जलडमरू मध्य और मन्नार की खाड़ी को विभाजित करती है। इस इलाके में समुद्र काफी उथला है। यहां पानी तीन से लेकर 30 फीट तक ही है। माना जाता है कि करीब 500 साल पहले तक तो यहां पानी इतना कम था कि मन्नार द्वीप और रामेश्वरम के बीच लोग इन टापुओं से होते हुए पैदल भी जा सकते थे। उस समय इसी को रामसेतु कहा जाने लगा था। फिर करीब 1480 में आए एक तूफान की वजह से न केवल इस सेतु का एक हिस्सा नष्ट हो गया, बल्कि यहां पानी की गहराई बढ़ने से यह डूब भी गया।

पौराणिक बनाम वैज्ञानिक

पौराणिक मान्यता यह है कि सीता को रावण से मुक्ति दिलाने के लिए भगवान राम ने लंका (अब श्रीलंका) पर चढ़ाई की थी। बीच में समुद्र पड़ने की वजह से लंका तक पहुंचने के लिए एक पुल का निर्माण किया गया था। यह पुल वानर सेना ने राम नाम लिखे पत्थरों से बनाया था। उसी पुल से जाकर भगवान राम ने लंका विजय की थी। हिंदूवादी संगठनों का दावा है कि मौजूदा रामसेतु वही पुल है जिसे राम की वानर सेना ने बनाया था। इसके पक्ष में वे अमरीकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा द्वारा खींचे गए चित्रों का भी हवाला देते हैं। उनका दावा है कि नासा के ये उपग्रह चित्र साबित कर देते हैं कि त्रेता युग में यानी करीब 17 लाख साल पहले समुद्र में एक पुल का निर्माण करवाया गया था।

सच तो यह है....

इसमें कोई दो राय नहीं है कि नासा के उपग्रहों द्वारा

खींचे गए चित्र समुद्र में 30 किलोमीटर क्षेत्र में कुछ ढांचों की उपस्थिति दर्शाते हैं, लेकिन हिंदूवादी संगठनों के इन दावों की पोल खुद नासा ने यह कहकर खोल दी है कि उसके चित्रों ने मात्र इन ढांचों की मौजूदगी दर्शाई है, उनकी उम्र के बारे में कुछ नहीं कहा है।

तो सवाल यह है कि आखिर यह है क्या? अगर भगवान राम ने इसका निर्माण नहीं करवाया तो फिर आखिर इसका निर्माता कौन है? इस बारे में विज्ञान गतिविधियों से जुड़े कई संस्थान और वैज्ञानिक सिद्ध कर चुके हैं कि इस कथित पुल का निर्माता और कोई नहीं, बल्कि स्वयं प्रकृति है। ये प्राकृतिक रूप से निर्मित रेत व लाइमस्टोन के टीले हैं जो करीब 30 किलोमीटर के इलाके में ऐसे फैले हैं कि एक रास्ते का एहसास देते हैं। नासा के उपग्रह चित्र भी उस इलाके में एक लंबी-सी रेखा दर्शाते हैं जिससे यही प्रतीत होता है कि उस स्थान पर कोई पुल-सा ढांचा बना हुआ है। लेकिन इस बारे में नासा के एक अधिकारी मार्क हेस साफ कर देते हैं कि यह ढांचा प्राकृतिक रूप से रेत के टीलों से निर्मित है। उनका यह भी कहना है कि नासा वर्षों से इन टीलों पर नज़र रखता आया है और उसके चित्र कोई नई खोज नहीं हैं, क्योंकि इसमें कुछ भी नया नहीं है।

यह पुल भगवान राम के ज़माने में बना है, इसका खंडन दो बातों से हो जाता है। एक, कार्बन डेटिंग से और दूसरा, इस इलाके में मानव सभ्यता के उद्‌गम की संभावित तारीख से। भारतीदासन विश्वविद्यालय, त्रिचि के सेंटर फॉर रिमोट सेंसिंग के वैज्ञानिकों की एक टीम प्रोफेसर एस.एम. रामासामी की अगुवाई में इस बात का अध्ययन कर रही है कि तमिलनाडु की तट रेखा पर पिछले 40 हज़ार सालों में किस प्रकार के भौगोलिक परिवर्तन आए हैं। इस टीम ने इन तटों की कार्बन डेटिंग कर जो निष्कर्ष निकाला है, उसके अनुसार इस क्षेत्र के तटीय इलाकों की उम्र बमुश्किल छह हज़ार साल है। दूसरे शब्दों में कहें तो छह हज़ार साल के पहले तक यहां कोई समुद्र ही नहीं था। यानी जब समुद्र ही नहीं था, तो भला वानर सेना ने पुल कहां बनाया होगा! या उसे समुद्र पार करने की ज़रूरत ही कहां पड़ी होगी! पौराणिक मान्यताओं के अनुसार तो भगवान राम यहां लाखों साल पहले आए थे, जबकि कार्बन डेटिंग यहां समुद्री तटों को ही महज कुछ हज़ार साल पुराना साबित कर देती है। जहां तक इन टीलों का सवाल है, रामासामी के मुताबिक उनका निर्माण प्राकृतिक रूप से करीब 3,500 साल पहले हुआ होगा। बाद में इन पर मूंगे या कोरल जमते गए होंगे। इस प्रकार लाइन में जमे इन टीलों ने पुल जैसी संरचना का रूप ले लिया होगा।

एक दूसरा तथ्य भी रामसेतु के बारे में हिंदूवादी संगठनों के दावों का खंडन करता है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के इतिहासविद् बी.डी. चट्‌टोपाध्याय कहते हैं कि भारतीय उपमहाद्वीप में ढाई से तीन लाख साल पूर्व से ही मानव की उपस्थिति के प्रमाण मिलते हैं। इसके पहले यहां मानव सभ्यता के कोई प्रमाण नहीं पाए गए हैं। फिर यह कैसे माना जा सकता है कि भगवान राम की वानर सेना ने यह सेतु बनाया होगा, जो पौराणिक मान्यताओं के अनुसार करीब 17 लाख साल पहले बना होना चाहिए।

सेतुसमुद्रम परियोजना

रामसेतु पर विवाद कोई नया नहीं है, लेकिन दो साल पहले सेतुसमुद्रम नौवहन नहर परियोजना के शिलान्यास के साथ ही यह विवाद एक बार फिर सतह पर आ गया है। योजना के तहत पाक जलडमरू मध्य और मन्नार की खाड़ी को जोड़ते हुए एक ऐसी समुद्री नहर बननी है जिससे समुद्री जहाज़ आसानी से निकल सकें। परियोजना के समर्थकों के अनुसार इस 83 किलोमीटर लंबी नहर का एक फायदा यह होगा कि इससे मालवाहक जहाज़ों को करीब400 किलोमीटर का सफर कम तय करना होगा। इससे न केवल उनके 30 घंटे बचेंगे, बल्कि ईंधन की भी भारी बचत होगी। इससे तमिलनाडु तट पर बेहतर बंदरगाहों के विकास की राह भी खुलेगी। चूंकि इस क्षेत्र में पानी काफी कम है, इसलिए नहर के निर्माण के लिए यहां गहरी खुदाई करनी होगी। विवाद भी इसी वजह से पैदा हुआ है। रामसेतु के समर्थकों का कहना है कि खुदाई की वजह से धार्मिक महत्व का यह पूरा ढांचा ही खत्म हो जाएगा।

इस परियोजना का आस्था के नाम पर तो विरोध हो ही

रहा है, लेकिन देखा जाए तो इससे कई पर्यावरणीय महत्व के सवाल भी उठ खड़े हुए हैं। इसलिए पर्यावरणविद् व पर्यावरणवादी भी इसके खिलाफ हैं। उनके विरोध का आधार निम्नानुसार हैं:

1. जहाज़ों से रिसने वाले तेल व अन्य प्रदूषण से यहां के जल क्षेत्र, विशेषकर मन्नार की खाड़ी के अति संवेदनशील इकोसिस्टम पर असर पड़ सकता है।

2. समुद्र की गहराई बढ़ने से उच्च ज्वार भाटे पैदा होंगे और शक्तिशाली लहरें उठेंगी। इसकी वजह से तटों के कटाव की आशंका है।

3. जहाज़ों के लगातार आवागमन से समुद्र का तापमान प्रभावित होगा। इससे वर्षा के पैटर्न में भी परिवर्तन आने की आशंका है।

वैसे सबसे पहला नुकसान तो परियोजना के निर्माण के दौरान ही होगा। नहर की खुदाई से समुद्र के पेंदे में जमी मिट्टी व हानिकारक पदार्थ सतह पर आ जाएंगे जो कई प्रजातियों के जीवों को लील लेंगे। नहर बन जाने के बाद वहां से गुज़रने वाले जहाज़ों से होने वाले प्रदूषण से भी कई प्रकार की समुद्री प्रजातियों का अस्तित्व संकट में आ जाएगा। मन्नार की खाड़ी 3,600 प्रकार की वनस्पतियों, जीव-जंतुओं व मछलियों का प्राकृतवास है। यह जैविक संपदा की दृष्टि से सम्पन्न इलाकों में से एक माना जाता है। खाड़ी के भारतीय इलाके में 117 प्रजातियों के मूंगे पाए जाते हैं। इसके अलावा मछलियों की सैकड़ों प्रजातियां भी यहां पाई जाती हैं। यहां व्हेल व डॉल्फिन भी बहुतायत में पाई जाती हैं। इसी प्रकार श्रीलंका का इलाका भी जैविक संपदा से परिपूर्ण है। इसे भी नुकसान पहुंचने की आशंका है। श्रीलंका सरकार ने इस सम्बंध में अपनी आपत्तियों से भारत सरकार को अवगत करवा दिया है। लेकिन इस परियोजना के आर्थिक लाभ श्रीलंका को भी मिलने वाले हैं, इसलिए वह आपत्तियों पर ज़्यादा जोर नहीं दे रहा है।

इकोसिस्टम के प्रभावित होने का असर मछुआरों पर भी पड़ना तय माना जा रहा है। अगर क्षेत्र से मछलियां खत्म हो

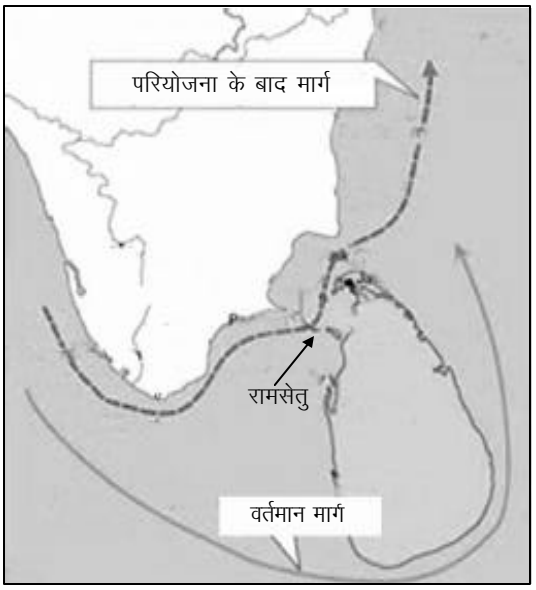

जाएंगी तो मछली पकड़ने वालों की आजीविका भी नहीं रहेगी। इसी वजह से मछुआरे भी इस परियोजना का विरोध कर रहे हैं। 2 जुलाई 2005 को परियोजना के शिलान्यास के दौरान सैकड़ों मछुआरों ने गिरफ्तारी देकर विरोध जताया था।

निष्कर्ष

इस दलील से तो सहमत नहीं हुआ जा सकता कि रामसेतु भगवान राम की वानर सेना द्वारा निर्मित है, क्योंकि यह साफ हो चुका है कि यह मानव निर्मित संरचना नहीं है। यह शुद्ध प्राकृतिक संरचना है। लेकिन इसके बावजूद संगठनों की इस चिंता से सहमति जताई जा सकती है कि सेतुसमुद्रम परियोजना की वजह से इस संरचना के अस्तित्व को खतरा है। और इसके साथ ही उस इलाके की पूरी इकोसिस्टम को भी खतरा हो सकता है। इसके अलावा जहाज़ों के आवागमन से प्रदूषण भी फैलेगा। और सबसे बड़ी बात तो यह है कि इससे लोगों के लिए आजीविका का संकट पैदा हो जाएगा। ***(स्रोत फीचर्स)***